डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 31-37

चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ

डॉ. मन्तोष यादव*

चित्रकूट की लोक कला संस्कृति विविधता और समृद्धि से परिपूर्ण है, जिसमें भित्ति चित्रण, पोथी चित्रण, महबुलिया कला, हस्तशिल्प, और मिट्टी के बर्तन जैसे विभिन्न कला रूप शामिल हैं। इस शोध का उद्देश्य चित्रकूट की इन कलाओं का साहित्यिक उल्लेख करना, इनके ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि को समझना, और इन कलाओं के विकास में आने वाली चुनौतियों और आशाओं की पहचान करना है। इस अध्ययन के लिए शोधविधि में साक्षात्कार, क्षेत्र कार्य, और साहित्यिक समीक्षा शामिल हैं, जिससे कला के विभिन्न पक्षों को समझने और उनका विश्लेषण करने में सहायता मिलेगी। ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से, चित्रकूट अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है, जिससे यहाँ की कला में विशेष धार्मिक और सांस्कृतिक तत्व झलकते हैं। चित्रकूट की लोक कलाओं की प्रमुख विशेषताओं में रंगों का जीवंत उपयोग, धार्मिक और लोक कथाओं का चित्रण, और स्थानीय जीवन की अभिव्यक्ति शामिल हैं। इन कलाओं के संरक्षण और प्रोत्साहन में अनेक चुनौतियाँ हैं, जैसे आधुनिकता का प्रभाव, आर्थिक समर्थन की कमी, और पारंपरिक तकनीकों का विलुप्त होना। हालांकि, इन कलाओं को संरक्षित और विकसित करने की आशा भी है, जैसे स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर इनका प्रोत्साहन, शैक्षिक संस्थानों में इनका समावेश, और कलाकारों के लिए आर्थिक सहायता की व्यवस्था। इस शोध का महत्व इन कलाओं के संरक्षण और संवर्धन में निहित है, जिससे वे आने वाली पीढ़ियों के लिए सजीव रह सकें।

मुख्य शब्द- लोक कला, शिल्पकला, संस्कृति, कला प्रोत्साहन, उम्मीद, प्रतिस्पर्धा,

विषय प्रवेश- चित्रकूट की लोक कला एवं संस्कृति की चर्चा करते समय इसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक महत्व को समझना आवश्यक है। चित्रकूट भारतीय उपमहाद्वीप के प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों में से एक है, जो अपनी अद्वितीय लोक कला और संस्कृति के लिए जाना जाता है। इस संदर्भ में, निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है।

साहित्यिक उल्लेख- चित्रकूट क्षेत्र की लोक कला संस्कृति का अध्ययन करने के लिए, पहले से उपलब्ध साहित्य और अनुसंधानों का उल्लेख महत्वपूर्ण है। इस भाग में चित्रकूट की लोक कलाओं जैसे कि लोक चित्रकला, लोक संगीत, लोक नृत्य और हस्तशिल्प का विवरण और उनके ऐतिहासिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। यह भी देखा जाएगा कि कैसे इन लोक कलाओं ने क्षेत्रीय संस्कृति को संवारने में योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति में चित्रकूट लोक कला संस्कृति का अद्वितीय स्थान है । यह क्षेत्र अपनी समृद्ध परंपराओं, धार्मिक कथाओं और जीवंत लोक कला के लिए प्रसिद्ध है। साहित्यिक दृष्टिकोण से चित्रकूट की लोक कला में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की कहानियाँ विशेष रूप से प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ की लोक कला में स्थानीय देवी-देवताओंप्रकृति और ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण होता है। डॉ. दीक्षित जी ने अपनी रचनाएँ में चित्रकूट की संस्कृति और लोक कला पर व्यापक शोध किया है। डॉ. राधेश्याम शुक्ला की पुस्तक 'चित्रकूट की लोक कला' जिसमें इस क्षेत्र की कला के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। जिसमे चित्रकूट की लोक चित्रकला का विवरण, उनकी शैली और तकनीक और उनके प्रमुख उदाहरणों पर चर्चा है। चित्रकूट के प्रमुख लोक गीत, संगीत वाद्ययंत्र और नृत्य की विधाओं पर चर्चा पर

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 31-37

प्रकाश डालने के साथ ही यहाँ के प्रमुख हस्तशिल्प उनकी निर्माण विधियाँ और उनका आर्थिक महत्व आदि का वर्णन किया गया है।

शोध प्रविधि- इस शोध पत्र में मुख्यतः गुणात्मक शोध विधियों का उपयोग किया जाएगा। इसके अंतर्गत क्षेत्र के कलाकारों, शिल्पियों, और कला संरक्षकों के साथ साक्षात्कार करके जानकारी संग्रह की गई है। इसके साथ ही यहाँ के संग्रहालयों, पुस्तकालयों और अभिलेखागारों में उपलब्ध चित्रकूट की लोक कला से संबंधित दस्तावेजों का अध्ययन करके संग्रहण किया गया है। चित्रकूट क्षेत्र का दौरा कर वहाँ की लोक कला की वर्तमान स्थिति का प्रत्यक्ष आकलन किया गया है।

शोध का महत्त्व - चित्रकूट की लोक कला संस्कृति का अध्ययन करना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर को समझने और संरक्षित करने में मदद करता है। यह अध्ययन लोक कला के उन पहलुओं को उजागर करेगा जो समय के साथ लुप्त हो रहे हैं और उनकेरुद्धार के लिए आवश्यक कदमों की पहचान करेगा। चित्रकूट की लोक कला की विविधता और विशिष्टता का संरक्षण महत्वपूर्ण है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस धरोहर से परिचित हो सकें।यहाँ की लोक कला स्थानीय समुदायों के बीच एकता और समन्वय को बढ़ावा देती है। इसके साथ ही लोक कला के संरक्षण और प्रचार से स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो सकते हैं।

शोध का उद्देश्य- इस शोध पत्र का उद्देश्य चित्रकूट की लोक कला संस्कृति का व्यापक अध्ययन करना और उल्लिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करना है, १-लोक कला की संरक्षण की रणनीतियों की पहचान और उनका कार्यान्वयन। २-लोक कला के प्रचार और प्रसार के लिए आवश्यक कदम। 3-लोक कला के माध्यम से स्थानीय आर्थिक विकास की संभावनाओं की पहचान।4- नई पीढ़ी को लोक कला की शिक्षा और उससे जुड़ी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूक करना। 5- चित्रकूट की लोक कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना। 6- वर्तमान में चित्रकूट लोक कला की स्थिति का विश्लेषण करना। 7- चित्रकूट लोक कला के संरक्षण और संवर्धन के लिए संभावित उपाय सुझाना। 8- इस कला के माध्यम से स्थानीय समुदायों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए रणनीतियाँ विकसित करना। इस शोध पत्र के माध्यम से चित्रकूट की लोक कला संस्कृति की समृद्धि और उसे संरक्षण हेतु की जाने वाली संभावनाओं पर व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होगा। यह न केवल सांस्कृतिक धरोहर को संजोने में मदद करेगा बल्कि नई पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में भी कार्य करेगा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

चित्रकूट, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित एक ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल है। यह स्थान हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों में से एक है और रामायण काल के घटनाओं से जुड़ा हुआ है। भगवान राम, सीता और लक्ष्मण ने अपने वनवास के 14 वर्षों में से 11 वर्ष यहां व्यतीत किए थे। इस स्थान का वर्णन वाल्मीकि रामायण और तुलसीदास की रामचरितमानस में भी मिलता है, जिससे इसकी धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता स्पष्ट होती है। साथ ही यह स्थान तपस्वियों और साधुओं के तपोभूमि के रूप में भी प्रसिद्ध है। चित्रकूट के धार्मिक स्थलों में कामदगिरि पर्वत, गुप्त गोदावरी, और स्फटिक शिला जैसे धार्मिक स्थलों ने इस क्षेत्र को एक प्रमुख तीर्थ स्थान बना दिया है। इन स्थलों पर आने वाले भक्त और यात्रियों ने यहां की कला और शिल्प को समृद्ध किया है। इस क्षेत्र में विभिन्न राजवंशों का शासन रहा है, जिन्होंने यहां की कला और

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 31-37

संस्कृति को संरक्षण और प्रोत्साहन दिया। विशेषकर बुंदेलखंड के परमार, हरिहर व् चंदेल राजाओं ने यहां की कला को विशेष बढ़ावा दिया।

भौगोलिक पृष्ठभूमि-

चित्रकूट की भौगोलिक विशेषताएं भी यहां की लोक कला को प्रभावित करती हैं। यह क्षेत्र विंध्य पर्वतमाला के बीच बसा है और यहां की प्राकृतिक सुंदरता ने कला और साहित्य को प्रेरित किया है। पहाड़ों और जंगलों के बीच स्थित चित्रकूट की प्राकृतिक सुंदरता ने यहां के कलाकारों को गहरे रूप से प्रभावित किया है। प्राकृतिक दृश्यावलियों को चित्रित करना यहां की कला का एक प्रमुख हिस्सा है। मंदाकिनी नदी और अन्य जल स्रोतों के किनारे बसे चित्रकूट ने यहां की लोक कला को समृद्ध किया है। जल के निकटता ने यहां के कलाकारों को जल स्रोतों की महत्ता और सुंदरता को अपनी कला में शामिल करने के लिए प्रेरित किया है। चित्रकूट की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। ग्रामीण जीवन और कृषि कार्य यहां की लोक कला का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ग्रामीण जीवन की सादगी और मेहनत को लोक चित्रों और मूर्तियों में विशेष स्थान दिया गया है। चित्रकूट की लोक कला की ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि ने इसे एक विशिष्ट और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर बनाया है। यहां की कला न केवल धार्मिक और ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाती है बल्कि प्राकृतिक सुंदरता और ग्रामीण जीवन की झलक भी प्रस्तुत करती है। चित्रकूट की लोक कला संस्कृति में ऐतिहासिक रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक तत्वों का विशेष महत्व रहा है। यहाँ की कला में रामायण और महाभारत की कहानियों का विस्तृत चित्रण मिलता है। इसके अलावा, मुगल और ब्रिटिश काल में भी इस क्षेत्र की कला पर प्रभाव पड़ा, जिससे इसकी शैली में विविधता आई। चित्रकूट का उल्लेख रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिलता है, जो इसे धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बनाता है।

लोक कलाओ के प्रकार-

चित्रकूट की चित्रकला धार्मिक और पौराणिक कथाओं पर आधारित होती है। यहाँ की चित्रकला में रामायण के दृश्यों और धार्मिक कथा-प्रसंगों को दर्शाया जाता है। चित्रकूट की लोक चित्रकला अपनी विशिष्ट शैली और धार्मिक, सांस्कृतिक, और प्राकृतिक तत्वों के साथ भारतीय लोक कला की एक महत्वपूर्ण शाखा है। इसमें विभिन्न प्रकार की कलाओं को शामिल किया गया है, जैसे कि लोक चित्रकला, भित्ति चित्रण, पोथी चित्रण, और महाबुलिया कला आदि।

चित्रकूट की लोक चित्रकला-

चित्रकूट की लोक चित्रकला में धार्मिक, पौराणिक, और ग्रामीण जीवन की झलक मिलती है। यह कला ग्रामीण समाज में प्रचलित है और इसकी जड़ें स्थानीय संस्कृति और परंपराओं में गहरी हैं। यहाँ की लोक चित्रकला में प्रमुख रूप से रामायण, महाभारत, और अन्य धार्मिक कथाओं का चित्रण किया जाता है।

भित्ति चित्रण- भित्ति चित्रण, चित्रकूट की एक प्रमुख कला शैली है, जिसमें मंदिरों, घरों, और सार्वजनिक स्थलों की दीवारों पर चित्र बनाए जाते हैं। यह चित्रण धार्मिक और सांस्कृतिक घटनाओं को चित्रित करता है। मध्य प्रदेश क्षेत्र स्थित रामघाट पर रत्नेस्वर मंदिर विशेष प्रचलित है जिसके मंडपम में रामायण की सम्पूर्ण चरित्र चित्रण को राजस्थानी शैली में उकेरी गई है इसके अतिरिक्त परिक्रमा मार्ग व् रामघाट के कई मंदिर एवं धर्मशालाओ में चित्रण कार्य किये गए है, वर्तमान में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के राजकीय प्रसाशन सुन्दरीकरण अंतर्गत सम्पूर्ण स्थलों पर भितिचित्रण का कार्य करा रही है, जिसमे धार्मिक चित्रण, रामायण और

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 31-37

महाभारत के प्रसंगों का चित्रण प्रमुखता से किया जाता है। एवं प्राकृतिक दृश्य, पहाड़, नदी, और वन्यजीवन के दृश्य प्रमुख होते हैं। यहाँ के ग्रामीण जीवन, त्यौहार, और कृषि कार्यों का चित्रण भी देखने को मिलता है।

पोथी चित्रण-

पोथी चित्रण एक पारंपरिक कला है जिसमें धार्मिक ग्रंथों और कथाओं को चित्रित किया जाता है। यह चित्रण प्राचीन पांडुलिपियों और धार्मिक पुस्तकों में किया जाता है। विशेषताएँ धार्मिक और पौराणिक कथा, रामायण, महाभारत, और अन्य धार्मिक ग्रंथों की कहानियाँ। लघुचित्रण में छोटे आकार के चित्र जो विस्तृत और सूक्ष्म विवरणों के साथ बनाए जाते हैं। इन्हे बनाने में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग प्रमुखता से होता है। (नारायण, 2013)

महबुलिया कला-

महबुलिया, सृजन व तकनीक जीवन जीवन यह कला ग्रामीण जन- मध्य उसके आंगन व दिवारों पर बिना किसी आवलम्ब तथा आश्रयदाता के निरन्तर फैलती और आगे बढ़ती चली आ रही है। दशहरा के आगमन का सूचक इस कला का सृजन आश्विन (कुंवार) माह के पितृ पक्ष में सर्वत्र देखा जा सकता है। मूलतः इस कला का सृजन बालिकाओं द्वारा ही किया जाता है। वे समूह में सुबह-सबेरे ही पुष्प संचय करती हैं और सांध्य वेला में इसका निर्माण व सृजन आरंभ होता है। इस कला का सृजन धरातल, फर्श, कटीला पौधा व दिवार आदि पर की जाती है। इसके सृजन से पूर्व निर्माण स्थल को रंग, चूने अथवा गोबर आदि से लीप लिया जाता है। तत्पश्चात् गीले गोबर से ही आकृति को उभार कर उकेरा जाता है। इसके बाद भाँति-भाँति के फूलों के रंग-बिरंगे पंखुडियों को इस पर चिपका कर इसे अन्तिम रुप प्रदान किया जाता है। वाहृय लाल पंखुडियों की श्रृंखला मध्य पीले और उसके बीच भूरे या काले पंखुडियाँ बरबस ही नयनों का रोक लेती हैं। कहीं-कहीं पर पंखुडियों की जगह रंगीन पत्थर, पन्नी, सीप व घोघे भी चिपकाये जाते हैं। आकृति के तैयार हो जाने पर इसकी विधिवत पूजा अर्चना कर आरती उतारी जाती है, तथा भोग प्रसाद बाटे जाते है, अन्तिम दिन इस कला की प्रस्तुति कटीली झाड़ियो और सूखी टहनियों में फूलो की रंगीन पंखुडियो को पिरो कर तैयार की जाती है तदोपरांत गाजे बाजे के साथ पास के नदी या तालाब में विसर्जित करने की परंपरा है। जो दुःख की घड़ी में भी शाँति और प्रसन्नता के भावों को व्यक्त करता है, लोक कला इन आकृतियों के सृजन में मुख्यतः ज्यामितीय आकार का प्रयोग किया जाता है। कही कही पर पशु-पक्षी व् पेड़-पौधों की आकृति के साथ मानव चित्रण का प्रयास दिखता है, टेढ़ी मेढ़ी रेखाए होते हुए भी सम्पूर्ण दृश्य मन को आकृष्ट कर लेती है, कही इसे भाई की लम्बी आयु के लिए बनाया जाता है तो कहीं लड़कियाँ अपने सुयोग्य वर एवं सुखद तथा सम्पन्न ससुराल की अभिलाशा को संजो कर बनाती है, कही कहीं इसे पितृपक्ष में निर्माण का तात्पर्य पूर्वजो को समर्पित तथा प्रेत आत्मा की शांति के लिए किया जाता है। लोक जीवन व् लोक संस्कृति की परिचायक के रूप में अन्य क्षेत्रीय कला की भांति यह कला भी अपनी एक अलग पहचान रखती है।

चित्रकूट की लोक चित्रकला, भित्ति चित्रण, पोथी चित्रण, और महबुलिया कला ने क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखा है। ये कलाएँ न केवल धार्मिक और पौराणिक कथाओं को चित्रित करती हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन और प्राकृतिक सौंदर्य को भी दर्शाती हैं। इन कलाओं ने चित्रकूट की संस्कृति को समृद्ध बनाया है और इसे एक विशिष्ट पहचान दी है।

हस्तशिल्प-

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 31-37

चित्रकूट के हस्तशिल्प में लकड़ी के खिलौने, और सजावटी वस्तुएं महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। लकड़ी के खिलौने चित्रकूट की लोक संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। सीतापुर निवासी गोरेलाल बताते है कि उनके द्वारा निर्मित लकड़ी के खिलौने स्थानीय ही नहीं अपितु अन्य प्रसिद्ध पर्यटक शहरों में भी निर्यात होते है, खिलौनों में सर्वप्रचलित गणेश जी की प्रतिमा है। कुछ खिलौने सादा यूलतः लकड़ी के रंग में रहते है किन्तु कुछ सुन्दर व् आकर्षक बनाने हेतु विभिन्न कच्चे रंगों को लाख में मिलकर लकड़ी पर चढ़ाया जाता है। इन रंगों को लाख चमक एवं पक्का करने का कार्य करता है, ये खिलौने बच्चों के लिए बनाए जाते हैं और उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में पसंद किए जाते हैं। इनमें लकड़ी के खेलने के बनाने के संस्कारी विचार होते हैं जो अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए ऐसे ही वस्तुओं का निर्माण करके जीवन यापन करते हैं। चित्रकूट में सजावटी वस्तुओं का उपयोग भी विशेष रूप से धार्मिक और सामाजिक समारोहों में होता है। ये वस्तुएं आमतौर पर हाथ से बनाई जाती हैं और मंदिरों, गांवों के दीवारों, और सामुदायिक स्थलों में सजावट के रूप में प्रयोग की जाती हैं। इनमें रंगीन धातु, रंग और विभिन्न आकृतियाँ शामिल होती हैं जो स्थानीय संस्कृति को दर्शाती हैं।

मिट्टी के बर्तन-

मिट्टी के बर्तन चित्रकूट की लोक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये बर्तन स्थानीय गांवों में हाथ से बनाए जाते हैं और उन्हें पूजा पाठ, उत्सव एवं जल व् सामग्री रखने हेतु और अन्य खाद्य पदार्थों परोसने के लिए उपयोग किया जाता है। इन बर्तनों की खास बात यह है कि वे परंपरागत ढंग से बनाए जाते हैं और उन्हें स्थानीय मिट्टी का प्रयोग करके बनाया जाता है।

चित्रकूट की इन सभी वस्तुओं ने स्थानीय समाज की भविष्य में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को समर्थन मिलता है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को भी मजबूत करता है। चित्रकूट में लोक संगीत और नृत्य की समृद्ध परंपरा है। यहाँ के भजनों, कीर्तन, और लोकगीतों में धार्मिक और सांस्कृतिक तत्वों का समावेश होता है। यहाँ की संस्कृति में धार्मिक त्यौहारों, मेलों, और उत्सवों का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के प्रमुख त्योहारों में राम नवमी, दीपावली, और मकर संक्रांति के अतिरिक्त प्रत्येक अमावस्या विशेष रूप से शामिल हैं, जो स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखते हैं।

चित्रकूट की लोक कलाओ की आशाएँ-

संरक्षण और संवर्धन- चित्रकूट की लोक कला और संस्कृति को संरक्षित करने और उसे भविष्य की पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। यहाँ कुछ मुख्य पहलू हैं जिन्हें अमल करते हुए प्रयास करना चाहिए -

1. संरक्षण और संग्रहण- स्थानीय सरकारें और सांस्कृतिक संस्थानों ने चित्रकूट में लोक कला के संरक्षण और संग्रहण के लिए विशेष महत्व दिया है। स्थानीय संग्रहालयों और कला संस्थानों में इस कला के प्रतिनिधित्व के लिए विशेष कला मेला और प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाने लगा है।

2. शिक्षा और प्रशिक्षण सरकारी संस्थानों द्वारा लोक कला को बच्चों और युवाओं के बीच प्रचारित करने के लिए विशेष शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए। इससे युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति और लोक कला के प्रति उत्साह बढ़ाने में मदद मिलेगी। स्थानीय विद्यालयों और संस्थानों में लोक कला और संस्कृति के महत्व को समझाने के लिए पाठ्यक्रम शामिल किए जाने चाहिए।

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 31-37

3. विकास योजनाएं सरकार द्वारा चित्रकूट में लोक कला के विकास को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाएं आयोजित करनी चाहिए। इन योजनाओं के तहत स्थानीय कला व् कलाकारों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उन्हें नई और स्थायी आय उपलब्ध कराने के लिए सहायता प्रदान की जानी चाहिए ।

4. सांस्कृतिक महोत्सव और प्रदर्शनियाँ- चित्रकूट में नियमित रूप से सांस्कृतिक महोत्सव और लोक कला प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती हैं। इनमें स्थानीय कलाकारों का प्रदर्शन, कार्यशालाएं, और लोक कला की प्रदर्शनी शामिल होनी चाहिए जो समुदाय को सांस्कृतिक रूप से जोड़ती हैं।

5. सहयोगी संगठन- गैर-सरकारी संगठनों ने भी चित्रकूट में लोक कला के प्रचार-प्रसार और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन संगठनों ने सांस्कृतिक प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं, और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया है जो स्थानीय कलाकारों को नई संभावनाओं के लिए उत्तेजित करते हैं। इन्हे और प्रोत्साहित करते हुए सरकारी आयोजनों से जोड़ना चाहिए ।

6- पर्यटन चित्रकूट की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों को रोजगार के अवसर मिल सके।

इन सभी प्रयासों के माध्यम से, चित्रकूट की लोक कला और संस्कृति को संरक्षित रखने और उसे आगामी पीढ़ियों तक पहुँचाने में सकारात्मक प्रगति जरुर मिलेगी।

चित्रकूट की लोक कलाओं की वर्तमान चुनौतियाँ

चित्रकूट की लोक कलाओं को बचाने और प्रोत्साहित करने में कई चुनौतियाँ आती हैं। इनमें से कुछ मुख्य चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं

आधुनिकता और पश्चिमीकरण- चित्रकूट जैसे गांवीय क्षेत्रों में आधुनिकता और पश्चिमीकरण की चुनौती सबसे बड़ी है। यहां के युवा पीढ़ी को अन्य आधुनिक विकल्पों और मुख्य शहरों में रोजगार के आकर्षण से प्रभावित होने की संभावना होती है, जिससे लोक कला को बचाने में रुचि कम होती है।

आर्थिक समस्याएँ- बढ़ती आर्थिक समस्याएँ भी लोक कलाओं के प्रति रुचि को कम कर सकती हैं। कई कलाकार अपने रोजगार के लिए अन्य क्षेत्रों में मिले अधिक अवसरों के लिए माइग्रेट कर सकते हैं, जिससे इस कला की प्रजनन प्रक्रिया पर असर पड़ता है।

संरक्षण की कमी- लोक कलाओं की संरक्षण की कमी एक अन्य मुख्य चुनौती है। स्थानीय समुदायों के बढ़ते आधुनिक आवासीय विकास के कारण, पारंपरिक ज्ञान और कौशल के प्रति रुचि कम हो रही है, जिससे लोक कलाओं को संजीवित रखने के लिए समुदायों को अधिक सक्रिय रूप से जुटने की आवश्यकता होती है।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए, सरकार, गैर-सरकारी संगठन, और स्थानीय समुदायों को साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। सामुदायिक सशक्तिकरण, विशेष शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन, और सांस्कृतिक प्रदर्शनियों को बढ़ावा देने से लोक कलाओं को सुरक्षित रखा जा सकता है और उनका महत्व समझाया जा सकता है।

निष्कर्ष

चित्रकूट की लोक कला एवं संस्कृति एक धरोहर है जिसे संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता है। इसके लिए स्थानीय समुदाय, सरकार, और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर कार्य करना होगा। पारंपरिक कला और संस्कृति का संरक्षण न केवल हमारे अतीत को जीवित रखता है बल्कि भविष्य की पीढ़ियों को भी अपनी जड़ों

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 31-37

से जोड़ता है। उपरोक्त सुझावों को लागू करके चित्रकूट लोक कला संस्कृति को न केवल संरक्षित किया जा सकता है बल्कि इसे नए सिरे से विकसित भी किया जा सकता है, जिससे यह कला की दुनिया में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए रख सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सिंह, आर. (2012). चित्रकूट लोक संस्कृतिः ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य. सरस्वती प्रकाशन. इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या- 310

2. दीक्षित, जी. (2015). चित्रकूट की लोक कलाः एक सांस्कृतिक अध्ययन. आदर्श प्रकाशन. दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 250

3. मिश्रा,एन.(2018). चित्रकूट की भित्ति चित्रण कला. कला अध्ययन प्रकाशन. भोपाल, पृष्ठ संख्या- 220

4. जैन, पी. (2016). लोक कला में चित्रकूट की विशेषताएँ. सांस्कृतिक विमर्श प्रकाशन. जयपुर, पृष्ठ संख्या- 275

5. मिश्रा,एन.(2018). चित्रकूट की भित्ति चित्रण कला. कला अध्ययन प्रकाशन. भोपाल, पृष्ठ संख्या- 220

6. गुप्ता, ए. (2020). चित्रकूट की महबुलिया कलाः एक समीक्षा. समृद्धि प्रकाशन. दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 300

7. चतुर्वेदी, के. (2023). चित्रकूट की सांस्कृतिक विविधता और लोक कला परंपरा, विश्व पुस्तकालय, 707 एवेन्यू, ऋषिकेश, पृष्ठ संख्या- 340

8. कुमार,एस. (2014). चित्रकूट हस्तशिल्प- परंपरा और आधुनिकता. संस्कृति प्रकाशन. कानपुर, पृष्ठ संख्या- 260

9. शर्मा, द. (2017). चित्रकूट के मिट्टी के बर्तनः एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण. शिल्प प्रकाशन. देहरादून, पृष्ठ संख्या- 245

10. नारायण, एन. (2013). चित्रकूट लोक कला- परंपरा और विकास. सांस्कृतिक अध्ययन प्रकाशन. बरेली, पृष्ठ संख्या- 235

11. अग्रवाल, एल. (2019). चित्रकूट लोक कला का संरक्षण और भविष्य. लोक संस्कृति प्रकाशन. आगरा, पृष्ठ संख्या- 285

12. अग्रवाल, एल. (2019). चित्रकूट लोक कला का संरक्षण और भविष्य. लोक संस्कृति प्रकाशन. आगरा, पृष्ठ संख्या- 285

अस्सिस्टेंट प्रोफेसर,

ललित कला विभाग, देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून उत्तराखंड